अस्तित्व

सुषमा मुनींद्र

कथाकार परिचय

जन्म : ५ अक्तूबर, १९५९ को।
शिक्षा : विज्ञान स्नातक।
सृजन : कहानी संग्रह—'मेरी बिटिया', 'नुक्कड़ नाटक', 'महिमा मंडित'; उपन्यास—'गृहस्थी'। कुछ रचनाओं का अन्य भाषाओं में अनुवाद। आकाशवाणी से कहानियाँ व नाटकों का प्रसारण।
पुरस्कार : बिहार का 'चंद्रधर शर्मा गुलेरी पुरस्कार' तथा अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, राजस्थान का 'पं. हीरालाल शुक्ल स्मृति पुरस्कार'।
संप्रति : स्वतंत्र लेखन।

विभाग प्रसन्न है। महिला अधिकारी पोस्टिंग पर आ रही हैं। कर्मचारियों के चेहरे रौनक से दीप्त हैं। कार्यालय में स्त्री का पदार्पण पहली मरतबा नहीं हो रहा है। तीन-चार वर्ष पहले आयकर अधिकारी रमणी जायसवाल यहाँ पदस्थ थीं; पर वे साँवली-साधारण थीं और पुरुषों से हेल-मेल नहीं रखती थीं। कार्यालय में एक लड़की बाबू के पद पर है। यह अपनी प्रथम नियुक्ति से यहीं जमी हुई है। इसे पिता के स्थान पर अनुकंपा-नियुक्ति मिली है। अत: इस विभाग के लोग इसे आज भी इसके पिता से जोड़कर देखते हैं और तीस-बत्तीस की अवस्था के बावजूद इसे लड़की ही कहते हैं। एक तरह से यह लड़की कतई उपेक्षित सदस्य की तरह है। पोस्टिंग पर आनेवाली आयकर अधिकारी को लेकर जानकारी मिली है कि मैडम खूबसूरत और खासी मेंटेन हैं। विभाग को आशा है, अब यहाँ की वायु और ऋतु ताजादम हो उठेंगी। विभाग के लोगों की महत्त्वाकांक्षा एकाएक बढ़ गई है। तमाम आधुनिकता, प्रगतिशीलता के साथ स्त्री के संदर्भ में न्यूनतम और अधिकतम विकास इतना ही है। स्त्री आज भी वस्तु, पदार्थ, उत्पाद, संपदा से अधिक अर्थ नहीं रखती। वह सार्वजनिक क्षेत्र में है तब तो हर कोई उसके निजी क्षेत्र में दखल रखना चाहता है, उसपर दावा दायर करना चाहता है।

मैडम अपेक्षाकृत छोटी जगह से आई हैं। इस बड़ी जगह को देखकर घबरा तो नहीं रहीं, किंचित् परेशान हैं। प्रत्येक नई जगह पुरानी जगह से थोड़ा भिन्न होते हुए प्राय: एक समान होती है। कार्यालय में भरा ठसाठस शोर, भीड़, टुच्चापन, टिप्पणियाँ। शायद बड़ी जगह होने के कारण उन्हें लग रहा है, यहाँ का प्रत्येक जन उनके मार्ग में बाधा पहुँचाने के लिए चेष्टारत है। मैडम से सभी जोशीले अंदाज में मिले; पर वे ऐसे संकोच, बल्कि दहशत, से मिलीं मानो किसी से परिचय नहीं करना चाहतीं।

इसपर विभागीय टिप्पणी, 'अभी नई हैं, धीरे-धीरे खुलेंगी।'

कार्यालय में सर्वोच्च पद सहायक आयुक्त का है और किसी भी कार्यालय की तरह चारण परंपरा यहाँ भी विकसित है। लोग बड़े साहब के मिजाज में खुद को ढालकर अपना मार्ग सुगम करते हैं। विभागीय लोगों का कुंडली चक्र (सी.आर., लोकल ट्रांसफर, प्रमोशन) बड़े साहब के हाथ में है। वर्तमान बड़े साहब बैडमिंटन-प्रेमी हैं। नित्य सायं विंध्य क्लब के बैडमिंटन कोर्ट में देखे जा सकते हैं। विभागीय लोग, अधिकारी, वकील अपना काम स्थगित कर खेल खेलने-देखने पहुँचते हैं। साहब से हार जाने में समीपता की संभावना बनती है और साहब अपने चाहनेवालों के प्रति नरम-उदार भाव रखने लगे हैं।

मैडम को लेकर जिज्ञासा बनी हुई है—

'पहलेवाले आई.टी.ओ. साहब का खेल देखने क्लब जाते थे, क्या मैडम भी जाएँगी?'

'नहीं, मैडम स्त्री हैं और स्त्री हर बात के लिए स्वतंत्र नहीं होती है। इनको पति के इच्छानुसार चलना पड़ता है।'

'साहब खफा हो जाएँगे।'

'बिलकुल नहीं। मैडम को बड़ा मुसकराकर टापते हैं।'

'मैडम भी उन्हें देखकर मुसकराएँ, तब बात बने।'

मैडम यद्यपि विभागीय लोगों से संकोच से मिलीं, तथापि वे समझती हैं—किसी भी कार्यालय की तरह यहाँ भी उन्हें एक बड़े पुरुष वर्ग का नियमित सामना करना है और आदर्श स्थिति यहाँ भी नहीं मिलेगी। इस बाबत उन्हें किसी को अपना शुभचिंतक अर्थात् सहयोगी बनाना होगा। तभी यहाँ खपना आसान हो सकेगा।

तो तीन व्यक्ति हैं, जो मैडम के लिए काम के साबित होंगे।

पहले हैं मैडम के इंस्पेक्टर रामसेवक, जिन्हें जल्दी ही विभाग के लोग 'मैडम सेवक' कहने लगे। मैडम बच्चियों के एडमिशन, गैस कनेक्शन, फर्नीचर, परदे इत्यादि की खरीद के

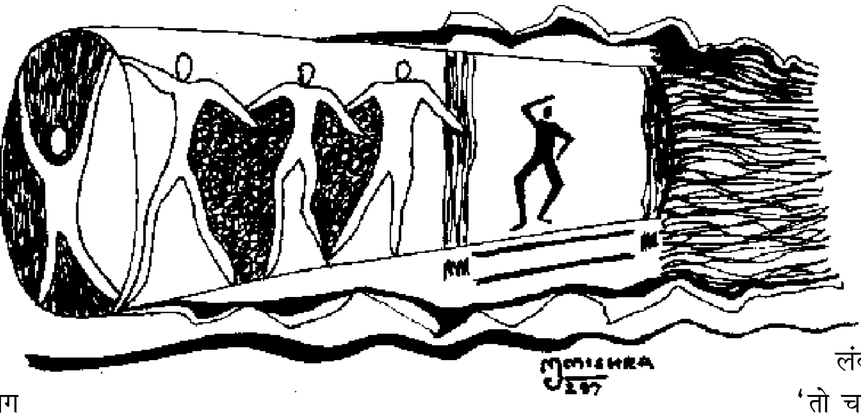

लिए रामसेवक को घर तलब करने लगीं और आप मैडम की व्यक्तिगत सूचनाओं का विश्वस्त सूत्र बन गए—'मैडम की दो बेटियाँ हैं, जो फर्स्ट और थर्ड में पढ़ती हैं। पति शहडोल में व्याख्याता हैं। एक पामेरियन पाल रखा है। लोग कहते हैं—मैडम मिलनसार नहीं हैं; जबकि मेरे साथ बहुत हँसमुख होती हैं।'

दूसरे हैं आयकर सलाहकार नील नारंग। मैडम इनसे कुछ कानूनी बिंदुओं पर डिस्कस करती हैं। नील नारंग अनुमान लगाते हैं—मैडम में ज्ञान और कौशल का अभाव है, इसलिए मैडम को इनकी सहायता लेते रहना होगा।

तीसरे हैं इस कार्यालय के सर्वाधिक सक्रिय वकील निश्छल कुलश्रेष्ठ। ये विभाग के सबसे जरूरी और सर्वोदयी टाइप के व्यक्ति हैं। मैडम की मेज पर इनके केस बहुतायत में हैं और इनका काफी समय मैडम के वातानुकूलित कक्ष में प्रकरण निपटाते हुए व्यतीत होता है। निश्छल कुलश्रेष्ठ की अनुभवी दृष्टि ने भाँप लिया है कि मैडम कार्यदक्ष नहीं हैं और घूस-रिश्वत भी खुलकर नहीं माँग पाती हैं। लिफाफे में जो दे दिया जाए, यथेष्ट मान लेती हैं। और कुलश्रेष्ठ मैडम के करीबी होने का दावा ठोंकने लगे हैं।

यदि सर्वेक्षण कराया जाए कि तीनों में किसका आधार मजबूत है तो सूई निश्छल कुलश्रेष्ठ की ओर घूमती है। रामसेवक मैडम के मातहत हैं, नील नारंग मैडम को विशेष विश्वसनीय जान नहीं पड़ते, इसलिए वे इन दोनों पर अपनी कोई कमजोरी जाहिर नहीं होने देना चाहतीं। किंतु कुलश्रेष्ठ की सर्वोदयी छवि की जानकारी मैडम को हो चुकी है, अत: प्रकरण संबंधी कानूनी अड़चनें, सावधानियाँ, बारीकियाँ, धाराएँ, बोर्ड और हाई कोर्ट के फैसले, किसी विशेष प्रकरण में विशेष परिस्थिति में मिलनेवाली कर की छूट, हानि-लाभ इत्यादि कुलश्रेष्ठ से पूछती रहती हैं। जानकारी प्राप्त करना सीधे उजागर न हो, इस हेतु सावधानी बतौर वार्त्ता में आत्मीयता का स्वल्प स्पर्श देते हुए बाजार भाव, धर्म, राजनीति, चुनाव, विभाग के यम-नियम, लोगों की कार्य-पद्धति, विचार इत्यादि औपचारिक संदर्भों पर कुछ कहती-सुनती हैं।

इस सबको कुलश्रेष्ठ इस तरह प्रचारित करते हैं, 'मैडम मेरे साथ बड़ी जल्दी बेतकल्लुफ हो गईं।'

रामसेवक कहते, 'मेरे साथ भी।'

नील नारंग कहते, 'मेरे साथ भी।'

ये तीनों इन दिनों प्रतिद्वंद्विता और आपसी समीपता एक साथ महसूस कर रहे हैं। परस्पर सताना, उकसाना, कुरेदना खूब चल रहा है। मैडम के संदर्भ में तीनों कुछ बातें छिपा लेते हैं, कुछ उद्‍घाटित करते हैं। तीनों की कोशिश रहती है तथ्यों को इस ढंग से रखें जिससे अनुमान निकले—मैडम एक उन्हीं से प्रभावित हैं, शेष दोनों से कार्यालयीन वास्ता रखती हैं। बातें कभी भी वास्तविक और सत्य स्वरूप में सामने नहीं आतीं।

रामसेवक बताने लगते, 'आजकल मैडम मुझे घर बहुत बुलाती हैं।'

इसपर नारंग कटाक्ष करते हैं, 'अच्छा, गैस सिलेंडर भरवाते होंगे, बच्चियों की स्कूल फीस जमा करवाते होंगे, कभी मैडम के शहडोल जाने का रिजर्वेशन करवाना पड़ता होगा। अभी उनका पेट (कुत्ता) सर्दी खा गया था तो आप उसे अस्पताल ले गए थे।'

तब रामसेवक जोर देकर कहते, 'काम तो बहाना है। काम छोटा होता है, बैठक लंबी जमती है।'

'तो चलिए, आपमें सेवाभाव जाग्रत् हो रहा है। मैडम का काम किए जाइए।'

'हाँ, उनका काम करने में मजा आता है।'

'तो ये कहिए आप रामसेवकजी, मैडम के खादिम हो गए हैं।' नारंग तुनक जाते हैं।

कुलश्रेष्ठ सामान्यत: अपने पत्ते जल्दी नहीं खोलते हैं। वे प्रहसन का-सा आनंद लेते हुए अपनी चतुर-चालाक मुसकान को प्रस्फुटित कर इतना भर बोले, 'काश, हम भी किसी बहाने मैडम के घर गए होते!'

रामसेवक यह सुनकर गौरव से भर उठे, 'अपनी-अपनी तकदीर है, कुलश्रेष्ठजी! मैडम के पति यहाँ रहते नहीं तो बहुत से काम हमें ही सँभालने पड़ते हैं।'

यहाँ रामसेवक यह तथ्य छिपा लेते हैं कि जब वे एक ही कॉलोनी में रहने का लाभ लेते हुए शाम को मैडम के घर जाते हैं, 'टहलने निकला तो सोचा, पूछता चलूँ कि मेरे लायक कोई काम हो।'

तब मैडम शासनपूर्ण सख्ती से कह देती हैं, 'रामसेवकजी, जब बुलाया जाए तब आएँ। मैं डिस्टर्ब होती हूँ।'

रामसेवक उदास हो जाते हैं; पर बात को दिल से नहीं लगाते।

इसी तरह नील नारंग बताते हैं, 'मैडम मेरी सहायता के बिना प्रिपरेशन नहीं कर सकतीं। उनमें विवेक-बुद्धि है ही नहीं। अच्छा है। मदद कर मोहतरमा को कृतार्थ कर पा रहा हूँ। दरस-परस होता है, चाय-कॉफी का दौर भी। काम

में मजा आ रहा है।'

रामसेवक नारंग को तिर्यक् होकर देखते हैं—अच्छा, तो आपकी अब तक निलंबित रही बुद्धि बहाल हो गई, जो मैडम की मेज का काम आप ही सँभाल रहे हैं!

रामसेवक ने नारंग के हौसले तोड़ना जरूरी समझा, 'आप मैडम की चतुराई समझें, नारंगजी। वे आप पर काम थोप रही हैं। शायद आपकी योग्यता को भी जाँचना चाहती हैं।'

'अरे, तो हम खरे ही उतरेंगे। मैडम कभी जान माँगकर तो देखें।' नारंग को चुनौती मंजूर।

कुलश्रेष्ठ ठीक मौके पर कूद पड़ते हैं, 'आप तो नारंगजी, लगे रहें। मैं नाचीज आपके कुछ काम आ सकूँ तो खुद पर गर्व करूँगा।'

सुनकर नारंग उपलब्धि भरी हँसी हँसते हैं। नारंग यह कभी भी नहीं बताते। जब उत्साहित होकर किसी प्रकरण में लीगल प्वॉइंट्स बताने की बुद्धिमानी दिखाते हैं तब मैडम डोज दे देती हैं, 'जब पूछूँ तब बताएँ।'

'सॉरी मैडम।' नारंग अचकचा जाते हैं। मैडम की यह उपेक्षा भरी फटकार पुरुषोचित अहं पर हमला जान पड़ती है।

मैडम स्वल्पभाषिणी हैं। दो कारणों से कम बोलती हैं। अधिसंख्यक पुरुष समुदाय के बीच स्त्री को नाप-जाँचकर कुछ बोलना होता है, दूसरे आप ऊँचे पद पर हों तो लोगों से खुलकर बात करने के लिए आजाद नहीं होते।

मैडम नारंगजी का विषाद भाँपकर कहतीं, 'बुरा न मानिए, नारंगजी! दरअसल मैं बहुत टीका-टिप्पणी पसंद नहीं करती। चाय पी जाए।'

नारंग का विषाद मंद पड़ जाता है।

जिस कार्यालय में अधिकारी-कर्मचारी अपनी जेब में हाथ नहीं डालते, चाय-पान-गुटखा वकीलों-व्यापारियों के खाते में जाता है वहाँ मैडम अपने कक्ष में पिलाई गई चाय का भुगतान स्वयं करती हैं।

तीसरे उम्मीदवार हैं निश्छल कुलश्रेष्ठ—ये गजब के व्यक्तित्व हैं। इनकी बौद्धिक ऊर्जा, तर्क और आग्रह गजब के हैं। इनकी पहली प्राथमिकता तमाम दंद-फंद कर अपने मुवक्किल पर लगे कर को घटाना अथवा समाप्त कराना होता है। ये कौन सी बात जाहिर करते हैं, कौन सी नहीं, इनके अतिरिक्त कोई नहीं जानता।

कहते हैं, 'आयुक्त आ रहे थे। उन्हें रिसीव करने मैडम को भी रेलवे स्टेशन जाना था। स्टेशन आठ किलोमीटर दूर। परेशान थीं। बोलीं, 'आप भी चलिए।' मैंने कहा, 'सरकारी अमले में मेरा क्या रोल?' बोलीं, 'बात यह है कि मैं विभागीय लोगों के साथ नहीं जाना चाहती, परेशानी होती है।' मैंने स्थिति को समझा। ड्यूटी भी करनी है और महिला होने की ढेर परेशानियाँ। मैंने ड्राइवर के साथ अपनी कार भेज दी।'

कहकर कुलश्रेष्ठ इस तरह जबरन की हँसी हँसे कि हँसी अपनी स्वाभाविकता और असलियत खोकर नाटकीय हो गई।

सुनकर रामसेवक मलिन पड़ गए—मैडम को गाड़ी चाहिए तो उनसे कहें! वे किसी व्यापारी की गाड़ी पकड़ ला सकते हैं।

किंतु नारंगजी थोड़ा हँसे, 'कुलश्रेष्ठजी, आप मैडम के नियर-डियर बने जा रहे हैं। मालूम होता है, बाजी आपके हाथ लगेगी।'

'आप भ्रम में न रहें, नारंगजी। मुझे लगता है, मैडम हमें महत्त्व कम देती हैं, इस्तेमाल अधिक कर रही हैं।' रामसेवकजी का तात्पर्य 'हमें' के स्थान पर 'आप दोनों' से है।

'मैडम मुसकराकर देख लें, हमारे लिए बहुत है। बाकी उनके जिगरी आप ही हैं, रामसेवकजी।' कुलश्रेष्ठ फिर नाटकीय होकर हँसे।

ये तीनों खुद को मैडम का खास सिद्ध करने में इस कदर जुटे हैं कि कभी-कभी असावधानीवश अथवा अति उत्साह में दूसरों के समक्ष भी मैडम की चर्चा ले बैठते हैं। तीनों से मिले संकेतों के आधार पर विभाग में कयास लगाए जा रहे हैं—इन तीनों में मैडम के नजदीक कौन है? या कि कोई नहीं है, तीनों व्यर्थ ही स्वयं को उछाल रहे हैं।

प्रसंगवश यह बता दें, विभाग में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो मैडम को स्त्री की तरह नहीं देखते बल्कि पदाधिकारी मानते हुए अनावश्यक ओछी चर्चा में लिप्त नहीं होते। इनका मानना है, जो लोग मैडम को इस तरह चर्चित-प्रचारित कर रहे हैं वे मानसिक विलासिता, चारित्रिक भटकाव, प्रमाद, कुंठा अथवा हीनता से संक्रमित हैं और निराधार परिकल्पना तथा फंतासी सपनों में जीते हैं। ऐसे वर्ग को विघ्न संतोषी मानते हुए रामसेवक, नारंग और कुलश्रेष्ठ ने प्रतिपक्ष में डाल रखा है।

कुल मिलाकर कार्यालय में आनंदप्रद वातावरण बना हुआ है। चुहल-चुटकियों का दौर चल रहा है। मैडम की गतिविधि पर नजर रखी जा रही है, 'आज तो काजल लगाकर आई हैं।'

'काजल की बात करते हो। अभी एक पार्टी में लाली लगाए हुए थीं।'

'वह तिकड़ी मैडम की जिगरी बनी हुई है।'

'बकवास है। तीनों खुद को उछाल रहे हैं।'

'वैसे कुलश्रेष्ठ मैडम के काम के आदमी हैं। मैडम भली प्रकार काम जानती नहीं हैं और…'

'काम कैसे जानें? कानून की किताबें देखने की फुरसत ही कहाँ मिलती होगी? गृहस्थी, बच्चियाँ, शहडोल प्रवास।'

'सुना है, रात की पार्टियों में नहीं जातीं।'

'औरत जाति को बहुत सोचना पड़ता है।'

'क्लोजिंग के समय ऑफिस में देर तक काम चलता है और मैडम पाँच बजते ही घर जाने को फड़फड़ाने लगती हैं कि बच्चियाँ अकेली हैं। सुनते हैं, बड़े साहब का आदेश भी नहीं मानतीं। अरे, पद सँभाला है तो जिम्मेदारी भी सँभालो।'

'साहब का बैडमिंटन देखने भी नहीं जातीं।'

'न जाएँ, बस साहब को तनिक मुसकराकर देख लिया करें, साहब कृतार्थ हो जाएँगे।'

हाँ। बड़े साहब के लिए मैडम की एक

मुसकान जीवन-प्रदायिनी हो सकती है, पर मैडम उन्हें देखकर प्रयत्नपूर्वक अथवा अतिरिक्त रूप से मुसकराती नहीं हैं, अलबत्ता समुचित आदर देते हुए भी देर तक रुकने को सहमत नहीं होतीं। यह साहब को दु:ख देता है। कुलश्रेष्ठ चूँकि इस कार्यालय के सर्वाधिक जरूरी तथ्य हैं, इसलिए साहब के लिए भी नितांत आवश्यक और अपेक्षणीय हैं। आखिर इनकी वकालत धुप्पल में नहीं चल निकली है, बौद्धिक ऊर्जा का पूरा-पूरा इस्तेमाल हुआ है।

अपने भव्य चैंबर में विराजे साहब कुलश्रेष्ठ से बोले, 'कुलश्रेष्ठजी, मैडम आपको कुछ विचित्र नहीं लगतीं?'

कुलश्रेष्ठ चुप रहकर साहब के भाव भाँपते रहे।

'उनके चैंबर में आपका काफी वक्त गुजरता है, आपका क्या खयाल है?' साहब बेचैन हुए।

'भली हैं। काम में अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करतीं।' आखिरकार कुलश्रेष्ठ बोले।

'हस्तक्षेप तब करेंगी जब कानूनी प्रक्रिया को ठीक-ठीक समझेंगी।' साहब वैसे योग्य व्यक्ति हैं। तगड़ा-मोटा लिफाफा न दिया जाए तो ऐसे लीगल प्वॉइंट्स ढूँढ़ निकालते हैं कि त्राण पाना कठिन होता है।

कुलश्रेष्ठ शांत।

साहब बोले, 'विजिट पर चलने को कहो तो क्षमा चाहती हैं कि उन्हें बाहर आने-जाने में असुविधा होती है। यह क्या बात है? आपने आसंदी सँभाली है तो दौरे तो करने होंगे।'

'हाँ, महिलाओं को कुछ दिक्कतें होती हैं।' कुलश्रेष्ठ साहब के समक्ष गुरु-गंभीर बने रहते हैं।

जबकि साथ में बैडमिंटन खेलने की आत्मीयता-स्वरूप साहब कुलश्रेष्ठ से मधुर चर्चा करने में नहीं हिचकते, 'हाँ, जैसे···गाड़ी में चार व्यक्ति हैं तो मैडम किसके पास बैठें? और मर्द तो गाड़ी रुकवाकर कहीं भी फारिग हो ले, पर मैडम तो जहाँ-तहाँ नहीं बैठ सकतीं।

'देखिए रामसेवकजी, एक बात बता दूँ, मर्द स्त्री का इस्तेमाल करे या स्त्री मर्द का, मूल रूप से स्त्री ही इस्तेमाल होती है। स्त्री-स्वतंत्रता के नाम पर इनका इस्तेमाल और भी आसान हो गया है। विश्व सुंदरी, ब्रह्मांड सुंदरी बाजार के लिए इस्तेमाल हो रही हैं। अब ये खुद को स्वतंत्र, स्वावलंबी, स्वशासी मानती हैं तो मानें।'

दौरे पर नहीं जाना चाहतीं, देर तक कार्यालय में रुकना नहीं चाहतीं। हम अपना व्यक्तिगत काम तो कराते नहीं। कार्यालयीन काम है, जिसका आप वेतन लेती हैं।···क्या है न, मैडम साथ में रहें तो तबीयत हलकी लगती है।'

कुलश्रेष्ठ ने चौंककर साहब को निहारा—ऊँचे व्यक्तित्व भी भीतर से बौने साबित होते हैं। प्रकट में बोले, 'राइट सर!'

कुलश्रेष्ठ नस पहचानकर सही नस ही पकड़ते हैं। एक की बात दूसरे से नहीं कहते और सभी के प्रिय तथा राजदार बने रहते हैं।

यही कारण है, जहाँ मैडम अन्य के साथ संकोच से परिचित हुई वहीं कुलश्रेष्ठ के साथ आरंभिक हिचक के बाद कुछ खुलने लगीं। इतने बड़े कार्यालय में खपना है तो किसी पर भरोसा करना ही पड़ेगा।

कुलश्रेष्ठ मैडम के कक्ष में केस कराने पहुँचे तो वे फाइल खोले हुए थीं।

'आज इस केस का निपटारा हो जाए।'

'आप तो मैडम आदेश करें।' कुलश्रेष्ठ ने फाइल पर नजर डाली।

'मैं पहले छोटी जगह में थी, वहाँ इतना काम नहीं था। यह बड़ी जगह है, पूरे संभाग का काम यहाँ होता है। वर्क लोड बहुत है।'

'फिर भी आप तनावमुक्त रहकर काम कर पा रही हैं। आप जिस जिम्मेदारी से काम करती हैं वह अद्‍भुत है।'

'क्या किया जाए? पेंडिंग वर्क बहुत है। साहब को तो बैडमिंटन से फुरसत नहीं। ऊपर से फरमान जारी करते हैं, मुझे दफ्तर में देर तक रुककर काम करना चाहिए। मुसीबत है।'

'अब उन्हें कौन मार्गदर्शन दे सकता है? मेरा तो मानना है, जब से आप आई हैं, काम ने अच्छी गति पकड़ी है। आप न अनावश्यक रूप से हस्तक्षेप करती हैं, न काम को रोककर रखना चाहती हैं। यहाँ तो ऐसे-ऐसे विचित्र अधिकारी आए हैं कि क्या कहें। एक साहब बहुत ईमानदार थे; पर उनका व्यवहार ऐसा जैसे घूस न लेकर हमपर एहसान कर रहे हैं। हरदम बौखलाए रहते थे। चाहते थे—वे ईमानदार हैं, इसलिए उन्हें अतिरिक्त सम्मान दिया जाए। कई बार वे ऐसे बिंदु पर अड़ जाते थे, जो निरर्थक साबित होते थे।'

'फिर आप लोग काम कैसे कर पाते थे?'

'कर पाते थे। हम लोगों को अधिकारियों के उपद्रव सहने की आदत है।'

'उपद्रव! ओ गॉड!' मैडम हँसीं, 'ओ गॉड, मेरा कोई उपद्रव बताएँगे?'

'यही कि काम में अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करती हैं।' कुलश्रेष्ठ भी हँसे।

फिर कुलश्रेष्ठ ने इन बातों को नारंग और रामसेवक के समक्ष कुछ इस तरह रखा—

'जानते हैं आप लोग, मैडम मुझे अपना शुभचिंतक मानने लगी हैं। हमारी निगहबानी में रहें तो उनके योग-क्षेम की गारंटी हमारी।'

यह बात रामसेवक को सहज ग्राह्य नहीं हुई। बोले, 'कुलश्रेष्ठजी, आपको ऐसा नहीं लगता, मैडम हम तीनों से कुछ अधिक काम लेती हैं?'

'इश्क करना है तो मशक्कत करनी पड़ेगी। और फिर, मैं मैडम के कार्यकाल में

जितनी आसानी से केस निपटा पा रहा हूँ, वह पहले कभी नहीं हुआ।' कुलश्रेष्ठ शक्ति भर मोरचे पर डटे रहना चाहते हैं।

'यह तो है, काम आसान हो गया है।' नारंग ने अनुमोदन किया।

'आप दोनों भ्रम में न रहें। मैडम अपने काम के आदमियों को चुनकर अपना काम आसान कर रही हैं। हमें इस्तेमाल कर रही हैं और हम लोग फूलकर मुगौरा (मुगौड़ा) हो रहे हैं।' रामसेवक ऐसा कुछ कहकर कुलश्रेष्ठ के हौसले पस्त करना चाहते हैं, क्योंकि इन्हें आभास होता है कि कुलश्रेष्ठ बढ़त बनाते जा रहे हैं।

कुलश्रेष्ठ को झटका लगा, 'देखिए रामसेवकजी, एक बात बता दूँ, मर्द स्त्री का इस्तेमाल करे या स्त्री मर्द का, मूल रूप से स्त्री ही इस्तेमाल होती है। स्त्री-स्वतंत्रता के नाम पर इनका इस्तेमाल और भी आसान हो गया है। विश्व सुंदरी, ब्रह्मांड सुंदरी बाजार के लिए इस्तेमाल हो रही हैं। अब ये खुद को स्वतंत्र, स्वावलंबी, स्वशासी मानती हैं तो मानें।'

'ठीक फरमाते हैं। और यदि हमारा इस्तेमाल हो रहा है तो यही सही। हमें मैडम की मौजूदगी की, उन्हें देखने की, महसूसने की, संवाद करने की आदत पड़ गई है और हम खुश हैं।' नारंग स्वयं को उम्मीदवारी से खारिज करने को तैयार नहीं हैं।

जब कभी तीनों मैडम के पास बैठे हों तो वे इस ओर सजग रहते हैं कि मैडम का रुझान किसकी ओर है। तीनों को लगता है, उन्हीं की ओर है। स्थिति यह है कि मैडम पीली साड़ी पहनकर कार्यालय आएँ तो कुलश्रेष्ठ प्रमाणित करने लगते हैं—उन्हें पीला रंग पसंद है, यह मैडम पर जाहिर हो गया है, इसलिए वे पीली साड़ी पहनकर आई हैं। गुलाबी साड़ी पहन लें तो वह दिन रामसेवक के नाम रजिस्टर्ड हो जाता है और सलेटी पहनें तो नारंग की धमनियों का रक्त-संचार तेज हो जाता है।

मैडम को कभी किसी सूत्र से ज्ञात हो, ये जो उनके सहयोगी बने हुए हैं उन्हें पदाधिकारी के स्थान पर निखालिस स्त्री समझते हैं, तब वे कितनी परेशान होंगी, कहा नहीं जा सकता। ओहदे को उपेक्षित कर उसमें आरूढ़ स्त्री को लक्षित किया जाए, यह किसी भी स्त्री के लिए अपमानजनक होगा। मैडम के लिए भी है।

केस कुलश्रेष्ठ ही करा रहे थे। उनके साथ वह व्यापारी भी था जिसका केस था। वह युवा व्यापारी मैडम को निरंतर देख रहा था, जिससे उन्हें असुविधा हो रही थी।

अंततः वे धैर्य न रख सकीं, 'मिस्टर! इस तरह घूर क्यों रहे हैं? आदमी हैं या…'

'जऽऽ जऽऽ जीऽऽ मतलब?' बंदा चौंका अवश्य, पर पलकें नहीं झपकाईं।

'यह दफ्तर है, यहाँ तमीज से पेश होना चाहिए।'

'जऽऽ जीऽऽ मतलब?'

'मैं डिस्टर्ब हो रही हूँ।'

'मैडम! आप मुझे टॉर्चर कर रही हैं। मेरा केस हो रहा है और मैं आपकी ओर देखूँगा नहीं? मेरी नजर ऐसी ही है और इसके लिए मुझे आज तक किसी अधिकारी ने नहीं टोका।' आतंकित कर डालनेवाली स्थिर दृष्टि और स्वर।

मैडम हाँफने लगीं। बात क्षणांश में कुछ नहीं से बहुत कुछ हो गई। कुलश्रेष्ठ हक्का-बक्का।

'न टोका होगा; किंतु स्त्रियों के समक्ष कैसे प्रस्तुत हुआ जाए, आपको इसकी तमीज नहीं है।' मैडम हाँफते हुए ही बोलीं।

'आप तो ऑफिसर हैं।'

'गेट आउट…गेऽऽ टऽऽ आउट!' मैडम के कंठ से घुटी हुई ध्वनि निकली।

'अच्छा…निरंकारीजी, आप बाहर चलिए, प्लीज।' कुलश्रेष्ठ को जैसे चेत आया और उन्होंने उसे कक्ष से बाहर भेज दिया।

निरंकारी के जाने के बाद कुलश्रेष्ठ ने मैडम को ताका। मैडम मेज को जोर से थामे हुए थीं।

'मैडम, ये यहाँ के पुराने और घुटे हुए लोग हैं, किसी की नहीं सुनते। इसको भूल जाएँ।'

मैडम गहरी निराशा में थीं। जैसे दिए गए अधिकारों को छीन लिया गया है अथवा अधिकारों को प्रयोग करने की स्वतंत्रता नहीं है।

'ये अभद्रता अनदेखी की जानी चाहिए?' मुद्रा कुछ ऐसी करुण मानो लाख दृढ़ता दिखाएँ, पर स्वयं ही अपने स्त्री होने के दुर्बल-बोध से छूट नहीं पा रही हैं।

'क्या कीजिएगा? यहाँ तमाम तरह की घटनाएँ होती रहती हैं। एक बार इसी दफ्तर के एक चपरासी ने ए.सी. के बँगले पर जाकर खूब गाली-गलौज की; एक छोटा व्यापारी, जिसे लाखों का टैक्स लगा था, ए.सी. के चैंबर में ही उन्हें मुफ्तखोर, घूसखोर कहता रहा; फिर बहुत रोया कि सिर के बाल बेचकर टैक्स भरूँ? हमें जीने देंगे?…तो ऐसा हो जाता है। फिर भी मैं मानता हूँ, महिला अधिकारी के सामने सौहार्द बनाए रखना चाहिए।' कुलश्रेष्ठ मैडम को कंसोल करना चाह रहे थे कि एक उन्हीं के साथ यह नहीं हुआ है।

'महिला अधिकारी! मतलब? अधिकारी अधिकारी होता है, पुरुष या स्त्री नहीं। और उसे पदाधिकारी की तरह ही मान्यता दी जानी चाहिए।' मैडम जोरदार ढंग से खंडन करना चाहती थीं; किंतु स्त्री-बोध दुर्बल बना रहा था।

'हाँ, ऐसा होना चाहिए।'

'आपका यह शहर अजीब है, कुलश्रेष्ठजी। आपके लोग अजीब हैं। रामसेवकजी की बात कर रही हूँ। कभी किसी आवश्यक काम के लिए रामसेवकजी को घर बुला लेती हूँ तो वे टहलते हुए चाहे जब आने लगे। मुझे कहना पड़ा—जब बुलाया जाए तब आएँ। कितनी परेशानियाँ हैं।'

मैडम प्रसंग बदलकर स्वयं को सामान्य दरशाने की चेष्टा करती जान पड़ीं।

सुनकर कुलश्रेष्ठजी उत्फुल्ल हो उठे—रामसेवकजी, आपकी कोशिशें निरुद्देश्य तो नहीं, पर निष्फल हैं। बोले, 'बिलकुल, पद की गरिमा को समझना चाहिए। पदाधिकारी स्त्री हो तब तो पूरी सावधानी के साथ व्यवहार

करना चाहिए।'

'सावधानी की बात नहीं कर रही। दरअसल लोग पद और पदाधिकारी के संदर्भ में स्त्री-पुरुष का विभेद ले आते हैं और यह गलत है।' मैडम ने अपना मत दोहराया।

कुलश्रेष्ठ कह देना चाहते थे—मैडम, आपको लगता है, व्यापारी घूर रहा है, रामसेवक अनावश्यक घुसपैठ करते हैं, विजिट पर जाना नहीं चाहतीं, दफ्तर में देर तक रुक नहीं सकतीं और कहती हैं, पद के बीच में स्त्री-पुरुष का विभेद न लाया जाए। यह संभव नहीं। नहीं हो सकता। इस उद्गार को भीतर दबाकर बोले, 'मैंने कुछ गलत कह दिया हो तो क्षमा करें। मैडम, हम स्त्री को स्त्री के दायरे से बाहर रखकर देखें तो चीजें आसान हो जाएँ।'

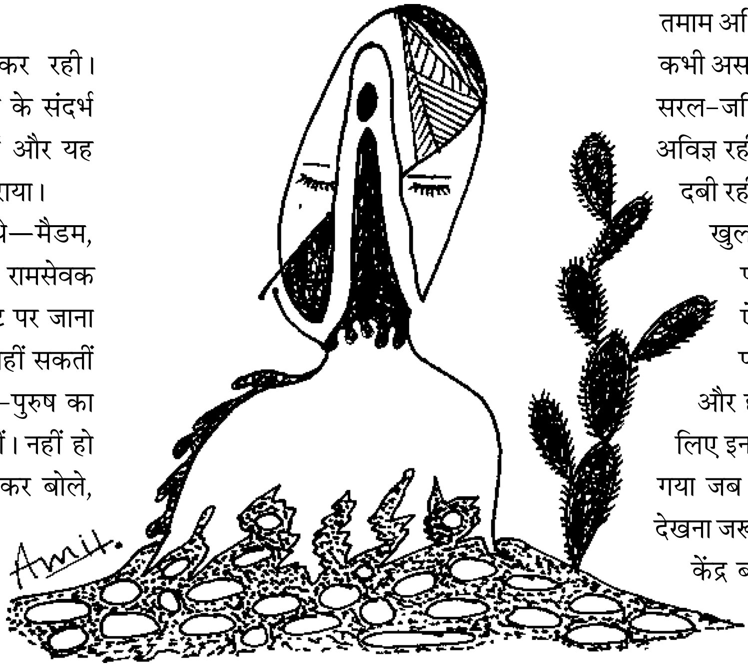

मैडम की चिंता और तनाव कुछ कम हुआ, 'मुझे संतोष है, आप व्यापक दृष्टि रखते हैं। इसीलिए आपसे कुछ बातें कह लेती हूँ।'

तीन वर्ष पूरे होते-न-होते मैडम का स्थानांतरण हो गया। मैडम के आगमन के साथ ही बढ़ गई महत्त्वाकांक्षाओंवाला यह कार्यालय एकाएक विषाद और वेदना से पीड़ित हो उठा। आखिर मैडम की कार्यालयीन-व्यक्तिगत गतिविधियों की चर्चा करने की सबको आदत-सी पड़ गई थी। कुलश्रेष्ठ, नारंग, रामसेवक सुस्त हैं। तीनों ने मैडम को अपने घर मध्याह्न भोज पर आमंत्रित किया। मैडम तीनों के परिवार से प्रसन्नतापूर्वक मिलीं और तीनों को अच्छे सहयोग तथा सामंजस्य के लिए धन्यवाद दिया। मैडम कुलश्रेष्ठ की पत्नी स्तुति से पहली बार ही मिल रही थीं, फिर भी आत्मीय हो गईं। स्तुति के पीछे-पीछे रसोई में पहुँच गईं। खाने के बीच वे स्तुति की ओर ही केंद्रित रहीं और घरेलू किस्म की बातें करती रहीं। कुलश्रेष्ठ ने ध्यान दिया, मैडम इस समय तनाव, झिझक, दबाव में कतई नहीं हैं, इसलिए प्रसन्न और स्वाभाविक दिख रही हैं। चलते समय स्तुति से बोलीं, 'आपके परिवार के साथ समय बिताकर अच्छा महसूस कर रही हूँ। कुलश्रेष्ठजी बहुत सहयोगी वृत्ति के सुलझे हुए व्यक्ति हैं और आप बहुत स्नेही और शांत हैं। शायद इसीलिए आपके घर का वातावरण सौहार्दपूर्ण है और आप लोग सुखी हैं।'

तत्पश्चात् मैडम कुलश्रेष्ठ से संबोधित हुईं, 'कुलश्रेष्ठजी, यहाँ का स्टाफ अच्छा है, बार तो बहुत अच्छा है। आप सभी ने मुझे अच्छा सहयोग दिया और मेरा काम सहज व आसान हो सका। खासकर आपने बहुत सहयोग किया। मैं हमेशा आपको याद रखूँगी।'

'मैं चाहता हूँ, आप ए.सी. बनकर यहाँ आएँ।' कुलश्रेष्ठ ने सदिच्छा दरशाई।

मैडम के जाने के बाद स्तुति कहने लगी, 'बड़ी भद्र और शालीन महिला हैं। इतने बड़े पद पर होते हुए भी दर्प-दंभ नहीं है। मैं डरी हुई थी; पर मैडम तो बहुत सहज-सरल बल्कि घरेलू लगीं।'

पता नहीं क्या था स्तुति के कथन में, पता नहीं क्या था विदा होती हुई मैडम की मुद्रा में। कुलश्रेष्ठ को लगा, वे तेजी से बदल रहे हैं। पता नहीं क्यों, पर पहली बार—हाँ, पहली बार ही कुलश्रेष्ठ को पछतावा हुआ— क्यों इस स्त्री को अनावश्यक रूप से चर्चित कर दिया गया? ये तो तमाम अधिकारियों की तरह ही कभी सहज, कभी असहज, प्रसन्न-अप्रसन्न, रुष्ट-तुष्ट, सरल-जटिल, सहयोगी-असहयोगी, विज्ञ-अविज्ञ रहीं। स्त्री होने के बोध से इस कदर दबी रहीं कि न कभी अपने अधिकारों का खुलकर प्रयोग कर पाईं, न किसी बिंदु पर जिद्दी होकर अड़ी रहीं। उन्होंने ऐसा कोई व्यवहार नहीं किया जो पदाधिकारी की सीमा से बाहर हो और हम लोगों की क्षुद्रता ये कि हमारे लिए इनका स्त्री होना इतना महत्त्वपूर्ण हो गया जब हमने इन्हें पदाधिकारी की तरह देखना जरूरी नहीं समझा। इन्हें मनोरंजन का केंद्र बनाकर हम तीनों ने शायद अपना वाग्विलास, लंपटता, टुच्चापन ही उजागर किया है। शायद एक लफंगापन, घटिया विचार, कुंठा प्रत्येक पुरुष के भीतर हर वक्त, हर उम्र में कुलबुलाती रहती है और स्त्रियों के संबंध में निराधार चर्चा कर हम लोग रति-सुख पाते हैं। मैडम मेरे प्रति कृतज्ञ हैं; पर मैं उनके प्रति जो शुभ चिंतना रखता रहा वह जान पाएँ तो उनका स्वाभिमान किस तरह चूर हो जाएगा। और मैं उनकी दृष्टि में कितना आदरणीय और अपेक्षणीय रह जाऊँगा? ओह! इनका पद, शक्ति, क्षमता वैसी ही है जैसे किसी भी पुरुष अधिकारी की होती है; फिर भी कार्यालय में रहना आसान हो सके और सबकुछ ठीक-ठाक चले, इसलिए इन्हें किसी को सहयोगी बनाना पड़ता है, सजग-सतर्क रहना पड़ता है। किसी को क्या हक था ठेठ अफवाहें फैलाकर मैडम को चर्चित करने का? हम पुरुष ऐसे क्यों हैं? क्यों? क्यों?...कुलश्रेष्ठ पहली बार, हाँ, पहली बार पछतावे में दिखे।

मैडम के स्थान पर नेमीचंद धगर आ गए हैं। जब कभी मौज में आकर नारंग और रामसेवक मैडम की चर्चा करते हैं तब कुलश्रेष्ठ उदास हो जाते हैं और नारंग व रामसेवक उनकी उदासी का कारण तलाशने लगते हैं। □

द्वारा—श्री एम.के. मिश्र, एडवोकेट,
लक्ष्मी मार्केट, रीवा रोड, सतना-४८५००१